दिनांक–21.02.2025

UG Third Semester MIC,MDC (Philosophy)

लघु उत्तरीय प्रश्न

Q.1. सांख्य दर्शन में पुरूष का क्या अर्थ है और इसे कैसे परिभाषित किया गया है?

Ans. सांख्य दर्शन में पुरुष का अर्थ है शुद्ध चेतना या आत्मा। पुरुष को अविनाशी, अपरिवर्त्तनीय और शाश्वत तत्त्व माना जाता है, जो सभी प्रकार के भौतिक बंधनों से मुक्त रहता है। पुरुष को साक्षी, अकर्त्ता, और अनुभवकर्त्ता के रूप में परिभाषित किया गया है। इसका मुख्य गुण यह है कि यह प्रकृति (भौतिक जगत) के सभी क्रिया-कलापों का अवलोकन करता है, लेकिन स्वयं किसी भी क्रिया में संलग्न नहीं होता। पुरुष न तो जन्म लेता है और न ही मरता है। यह शाश्वत है और इसके गुण या दोष नहीं होते।

पुरुष को समझने के लिए उसे प्रकृति से भिन्न समझा जाना चाहिए। पुरुष में न तो कोई परिवर्त्तन होता है और न ही वह किसी भी प्रकार की भौतिक या मानसिक गतिविधियों में भाग लेता है। यह केवल साक्षीभाव में स्थित रहकर सब कुछ देखता है और अनुभव करता है।

Q.2. सांख्य दर्शन में प्रकृति का क्या अर्थ है और इसके मुख्य गुण क्या हैं?

Ans. सांख्य दर्शन में प्रकृति का अर्थ है वह मूलभूत तत्त्व या पदार्थ, जिससे समस्त सृष्टि की उत्पत्ति होती है। प्रकृति को अचेतन, अव्यक्त और अविनाशी माना जाता है। यह तीन गुणों– सत्व, रजस और तमस– से मिलकर बनी होती है। इन गुणों के संतुलन और असंतुलन के कारण ही सृष्टि का निर्माण और विभिन्न घटनाएँ घटित होती हैं।

1. **सत्व** (Satva) : सत्व गुण का अर्थ है शुद्धता, प्रकाश और संतुलन। यह ज्ञान और सुख का प्रतीक है। सत्व गुण से ज्ञान, धैर्य और संतोष उत्पन्न होता है।
2. **रजस** (Rajas) : रजस गुण का अर्थ है सक्रियता, ऊर्जा और उत्तेजना। यह क्रिया और आंदोलन का प्रतीक है। रजस गुण से इच्छा, पीड़ा और अशांति उत्पन्न होती है।
3. **तमस** (Tamas) : तमस गुण का अर्थ है जड़ता, अंधकार और निष्क्रियता। यह अज्ञान और आलस्य का प्रतीक है। तमस गुण से अज्ञान, भ्रम और आलस्य उत्पन्न होता है।

प्रकृति में इन तीन गुणों का संतुलन और असंतुलन ही विभिन्न वस्तुओं और घटनाओं की उत्पत्ति का कारण है। जब प्रकृति के गुण असंतुलित होते हैं, तब सृष्टि का निर्माण होता है और विभिन्न तत्त्व और जीव उत्पन्न होते हैं।

डॉ. श्रवण कुमार मोदी
सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग
शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय
बारा चकिया,पूर्वी चम्पारण
मो0–9608685335
Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com